॥ ओ३म् ॥

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः"

"Let Noble Thoughts Come to us From Every Side"

वैदिक हवन-यज्ञ-विधि

व

जन्म दिवस के मन्त्र

सम्पादिका :

श्रीमती सरोज मुखी, एम. ए. बी. एड.

आई-१२७, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-११००१५

प्रकाशक :

श्रीमती मोहन देवी मुखी

आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट,

आई-१२७, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-११००१५

5/-

॥ ओ३म् ॥

समर्पण

अपनी जन्मदात्री

स्वर्गीय माता मोहन देवी मुखी को जिनकी असीम कृपा और तपस्या से हम वैदिक यज्ञ-पद्धति में निष्ठा, रुचि एवं श्रद्धा रख पाये और जिनकी प्रेरणादायक संस्मरण सर्वदा हमारा मार्ग-दर्शन करते रहते हैं।

सादर समर्पित

विनीत—पुत्र एवं पुत्रियां

युधिष्ठिर लाल मुखी
वीरसैन मुखी
विजय कुमार मुखी
सुदेश मित्र मुखी
भारत मित्र मुखी
राज रानी भाटिया
लीलावती वर्मा

INTRODUCTION

Havan-Yanja Mantras are Vaidika Mantras.

The Vaidika Mantras are called Vaidika prayers. These prayers consist of Mantras addressing different personifications of God. These Mantras have been taken from Rig Veda, Yajur Veda, Atharva Veda and Sama Veda. These are the most ancient scriptures in the world.

The Vaidika prayers reflect an optimistic approach to life. Prayers to d are made to obtain healthy mind healthy body, worldly wealth and sperity, peace and harmony. The Mantras teach us about Karma (Action), Upasana (Devotion), Yoga meditation (Union with God by Means of Concentration and contemplation), Dharma (Duty, Righteousness) Artha (Wealth), Kama (Enjoyment) and Moksha (freedom from the bondage of life and death).

In the Vaidika Mantras words I, me and mine are rarely used. Instead we,

us and our are frequently used. Unity and collectiveness is sought. The Vaidika prayers remind us to work together for unity, brother-hood, peace and tranquility as a family.

In the first eight Upasana Mantras we invoke God to dispell all our miseries and bestow upon us all that is blissful—health, wealth, peace and prosperity. Also to lead us to the virtuous path for the attainment of the true knowledge.

****

ओ३म्

पुस्तक के सम्बन्ध में

श्रीमती सरोज मुखी एक योग्य अध्यापिका होने के साथ-साथ धर्म में भी गहरी रुचि रखती हैं। उनकी इच्छा बनी रहती है कि भारतीय-मूल के लोग विदेशों में रह कर अपनी संस्कृति के प्रति सदा जागरूक रहें और भारतीय परम्पराओं को अपनी सन्तानों को भी उत्तराधिकार में सौंपते जायें। इसी दृष्टि से उनका यह प्रयास है।

वैदिक हवन-यज्ञ-विधि में केवल उतने ही मन्त्र रखे गये हैं जितनों से विदेशों में रहने वाले भारतीयों को सुविधा हो; रुचि बनी रहे; समय कम लगे। प्रत्येक विधि का संकेत अंग्रेजी में इस लिये दे दिया गया है कि हिन्दी न जानने वाले लोग भी विधि का ठीक प्रकार से अनुशीलन कर सकें। वेद-मंत्रों के अर्थ बड़ी सुगम विधि से हिन्दी में दे दिये गये हैं।

यज्ञ-हवन की इस संक्षिप्त विधि के उपरान्त जन्म-दिवस पर बोले जाने वाले कुछ मन्त्र जिनका अर्थ कविता में दिया गया है, सम्मिलित किये गये हैं। HAPPY BIRTH DAY पर उच्चारण किये जाने वाले ये आशीष वचन प्रेरणादायक सिद्ध होंगे।

आदरणीय श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री, अवकाश प्राप्त प्रधान आचार्य, A-67, कीर्तिनगर व माननीय श्रद्धेय परमसुख जी पाण्डेय पुरोहित, आर्यसमाज, मोतीनगर, जिन्होंने पुस्तक में

दिये गये मन्त्रों व उनके अर्थों का संशोधन किया व प्रूफ शोधन का कठिन कार्य भी किया एवं श्री ओ३म् प्रकाश गुप्ता जिन्होंने मनोहारी मुद्रण का सतत निरीक्षण कर, थोड़े से समय में, इस प्रयास को सफल बनाने में पूर्ण रूपेण सहायता की उन सब का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए परम पिता परमेश्वर से उनके हर प्रकार के कल्याण व सफल जीवन की कामना करता हूँ।

विजयकुमार मुखी
मैनेजिंग ट्रस्टी
श्रीमती मोहन देवी मुखी, आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट,
आई-127, कीर्तिनगर नई दिल्ली-११००१५

ओ३म्

समर्पण

अपनी जन्मदात्री
स्वर्गीया माता मोहनदेवी मुखी को
जिन की असीम कृपा और तपस्या से
हम वैदिक यज्ञ-पद्धति में
निष्ठा, रुचि एवं श्रद्धा
रख पाए और जिन के
प्रेरणादायक संस्मरण
सर्वदा हमारा मार्ग-दर्शन
करते रहते हैं
सादर समर्पित

विनीत :---

पुत्र एवं पुत्रियाँ

।। ओं सच्चिदानन्दाय परमात्मने नमः ।।

हवन-मंत्राः

सब संस्कारों के आदि में निम्नलिखित ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मंत्रों का पाठ और अर्थ एक विद्वान् एवं बुद्धिमान व्यक्ति स्थिर चित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगाकर करे और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें—(सं. विधि.)

अथेश्वरस्तुति-प्रार्थनोपासना-मन्त्राः

1. ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ।। १ ।।

अर्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध-स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याणकारण गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइए।। १ ।।

(इन आठ मंत्रों से ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना करें) सरल व्याख्या —

ओं देव
सवित : — हे सुखों के दाता, सारे जगत के पिता ओ३म्।
विश्वानि — हमारे सब
दुरितानि — दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को
परासुव — दूर कर दीजिए और

यद् — जो
भद्रम् — कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव, तथा पदार्थ हैं
तत् नः — वह सब हमें
आसुव — प्रदान कीजिए।

2. ओं हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।२।।

जो स्वप्रकाश-स्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुख-स्वरूप, शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से भक्ति विशेष किया करें।।२।।

सरल व्याख्या — ओम् (हे परमेश्वर ! आप)
हिरण्यगर्भः — स्वप्रकाश-स्वरूप, सभी प्रकाशक वस्तुओं को धारण करने वाले
अग्रे — सारे जगत की उत्पत्ति से पहले
समवर्त्तत — विराजमान थे
भूतस्य — उत्पन्न हुए जगत् का,
जातः — प्रसिद्ध
एकः पतिः — एक ही स्वामी

आसीत् — था, है।

स: — आप, भूमि

उत इमाम् द्याम् — तथा द्युलोक आदि लोकों के

दाधार — स्थिर रखने वाले हैं।

कस्मै — हम, सुखस्वरूप,

देवाय — शुद्ध परमात्मा आपकी

हविषा विधेम — भक्ति में निमग्न रहें।

3. ओं य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। ३ ।।

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्य स्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दु:ख का हेतु है, हम लोग उस सुख-स्वरूप, सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्त:करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें।। ३।।

सरल व्याख्या — **ओं**—हे परम पिता! आप

आत्मदा बलदा — आत्मबल तथा हर प्रकार की शक्ति के दाता हैं

विश्वे देवा: — संसार के सब विद्वान मनुष्य,

यस्य — जिस आपकी

उपासते — उपासना करते हैं और,

प्रशिषम् — आज्ञा और शासन को मानते हैं,
यस्य छाया — जिस आपका आश्रय लेने से,
अमृतम् — मोक्षादि सुखों की प्राप्ति होती है,
मृत्यु : — जिसके न मानने से मृत्यु आदि दुःखों को भोगना पड़ता है,
कस्मै देवाय — हम उस दुःख-रहित, सुखदाता परमेश्वर आपकी
हविषा विधेम — आज्ञा का पालन करते रहें अर्थात् वेदानुकूल व्यवहार करें।

4. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।४।।

जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य के देने हारे परमात्मा के लिए सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें।

सरल व्याख्या — ओं-हे परमपिता ! रक्षक
यः — जो आप
प्राणतो — प्राणधारी तथा,
निमिषतो — अप्राणिरूप,
जगतो — जगत के
महित्वा एक इत्- — अपनी महिमा से एक ही सबसे बड़े,

राजा	— व्यवस्थापक अर्थात् नियम से चलाने वाले
बभूव	— हैं,
यः	— जो आप
अस्य	— इस जगत् के
द्विपदश्चतुष्पदः	— दो पैर वाले (मनुष्य आदि) और चार पैर वाले (पशु) प्राणिमात्र के,
ईशे	— स्वामी हैं,
कस्मै देवाय	— उस आप आनन्ददाता परमेश्वर की
हविषा विधेम	— हम लोग हृदय से उपासना करते रहें।

5. ओं येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वःस्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण और जिस ईश्वर ने दुःख-रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता है और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक, कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।।५।।

6. ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।

हे [प्रजापते] सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! [त्वत्] आपसे [अन्यः] भिन्न दूसरा कोई [ता] उन [एतानि] इन [विश्वा] सब [जातानि] उत्पन्न हुए चेतनादिकों को [न] नहीं [परिबभूव] तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। [यत्कामाः] जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हमलोग [ते] आपका [जुहुमः] आश्रय लेवें और वांछा करें, [तत्] वह कामना [नः] हमारी सिद्ध होवे, जिससे [वयम्] हम लोग [रयीणाम्] धन-ऐश्वर्यों के [पतयः] स्वामी [स्याम] होवें।।६।।

7. ओं स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमान—शानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।७।।

हे मनुष्यो! [सः] वह परमात्मा [नः] अपने लोगों को [बन्धुः] भ्राता के मान सुखदायक, [जनिता] जगत् का उत्पादक, [सः] वह [विधाता] सब कामों का पूर्ण करने हारा [विश्वा] संपूर्ण [भुवनानि] लोकमात्र और [धामानि] नाम, स्थान और जन्मों को [वेद] जानता है। और [यत्र] जिस [तृतीये] सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्द युक्त [धामन्] मोक्ष स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में [अमृतम्] मोक्ष को [आनशानाः] प्राप्त होके [देवाः] विद्वान लोग [अध्यैरन्त] स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा

अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति करें।।७।।

8. **ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वायुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।८।।**

हे [अग्ने] स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने हारे [देव] सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे [विद्वान्] संपूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके [अस्मान्] हम लोगों को [राये] विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए [सुपथा] अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से [विश्वानि] संपूर्ण [वयुनानि] प्रज्ञान और उत्तम कर्म [नय] प्राप्त कराइए और [अस्मत्] हमसे [जुहुराणम] कुटिलतायुक्त [एनः] पापरूप कर्म को [युयोधि] दूर कीजिए, इस कारण हम लोग [ते] आपकी [भूयिष्ठाम्] बहुत प्रकार की स्तुतिरूप [नम उक्तिम्] नम्रतापूर्वक प्रशंसा [विधेम] सदा किया करें और सदा आनन्द में रहें।।८।।

ATHA SWASTIVACHANAM

The Swasti Vachanam Mantras are for invoking Auspiciousness, healthy thoughts for the healthy body. We pray to God for

intelligence, pure mind, steadfast spirit, friendship of learned people and worldly wealth as to lead a noble life.

अथ स्वस्ति-वाचनम्

1. ओं अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारं रत्नधातमम् ।।

भावार्थ—जो ज्ञानस्वरूप, सर्वत्र व्यापक, सब प्रकार के यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों का प्रकाशक, सब ऋतुओं में पूजनीय, सब सुखों का दाता और जो धन एवं ऐश्वर्य का भंडार है, हम सब को ऐसे प्रभु की उपासना, प्रार्थना व स्तुति करनी चाहिए।

2. ओं स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ।।

हे प्रभो ! हम आपके इतने समीप हों जैसे एक पुत्र अपने पिता के समीप होता है। हम आपसे ऐश्वर्य एवं सुख की याचना करते हैं। हमें कल्याणों से सम्पन्न कीजिए।

3. ओं स्वस्ति नो मिमीताम् अश्विना भगः
स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा
असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी
सुचेतुना ।।

हे प्रभु ! हमारी प्रार्थना है कि जल एवं वायु हम सबके लिए शुभ हों। हम सब के लिए सम्पूर्ण ऐश्वर्य, यह पृथ्वी सूर्य, मेघ आदि शुभ हों। ये सभी हमारे अज्ञान और आलस्य को दूर कर हमारा कल्याण करें। हमारी वैज्ञानिक उन्नति के लिए पृथ्वी एवं अंतरिक्ष शुभ हों।

4. **ओं स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।।**

हे प्रभु, हम कल्याण के लिए वायुदेव की उपासना करें। ऐश्वर्य देने वाला चन्द्रमा अपनी शांतिमय किरणों से इस संसार की रक्षा करे। हे संसार की रचना करने वाले प्रभु, हम अपनी रक्षा के लिए आपकी शरण में आते हैं और याचना करते हैं कि हममें से बहुत से लोग ज्ञानी व वेदों के ज्ञाता बनें।

5. **ओं विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।।**

हे प्रभु, विद्वान् हमारे लिए सुख-दायक हों। आप हम सबको ऐश्वर्य प्रदान करें। विद्वान् हमें बुरे कर्मों और बुरी आदतों से बचाएँ। न्याय-स्वरूप प्रभु, हमें पापों से बचाइए।

6. **ओं स्वस्ति मित्रावरुण स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।।**

हे प्रभु, हमारे लिए विद्युत, अग्नि, वायु और जल कल्याणकारी हों। शुभ ऐश्वर्य और सौभाग्य की हम सब पर वर्षा हो। हम दीर्घायु हों।

7. ओं स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पूनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि । ।।

हे ईश्वर, जैसे सूर्य और चाँद पूरे संसार के लिए सुखकारी हैं, उसी प्रकार हम दूसरों को सन्मार्ग पर प्रेरित करने में सहायक हों। सहायता देने वाले, किसी को दुःख न देने वाले विद्वानों के साथ मित्रता करें।

8. ओं ये देवानाम् यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा
अमृता ऋृतज्ञाः। ते नो रासन्ताम् उरुगायमद्य
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।

वे (संत) जो विद्वानों में सम्माननीय हैं और जो यज्ञादि करने में कुशल हैं, वे हम पर ज्ञान की वर्षा करें। विद्वान् लोग अपने आशीर्वाद से सदा सर्वत्र हमारी रक्षा करें।

ATHA SHANTI KARANAM

The Shanti Karanam Mantras are for invoking 'Peace'. We pray for physical, mental and spiritual peace. We ask for peace in the sky, in space, peace on land and in waters, peace in all four directions, peace in

our homes, peace in our society, peace in our nation and above all peace in the whole world.

अथ शान्ति-करणम्

1. ओं यज्जाग्रतो दुरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषाम् ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

हे ओम् ! यह दिव्य गुणों वाला मन जो जागते हुए बहुत दूर तक जाता है और जो मन सोते हुए भी उसी प्रकार दूर-दूर गति करता है, वह प्रकाशमय मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

2. ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

हे ओम् ! संयम कर जिस मन से मुनिजन यज्ञादि करते हैं और शुभ कार्यों में लगे रहते हैं, जो अपूर्व सब विषयों के ज्ञान का साधन हर मानव में है, हे प्रभु, मेरा वह मन शुभ विचारों से भरा रहे।

3. ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तर-मृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋृते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे नमः शिवसंकल्पस्तु।।

ओम्! जो मन ज्ञान का उत्तम भंडार है, स्मरण शक्ति और धारणा शक्ति का स्रोत है, जिस मन के बिना कोई भी कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभसंकल्पों वाला हो।

4. **ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।**

ओम् ! जिस अमृत मन से भूत, वर्तमान एवं भविष्यत् के सब वृत्तांत जाने जाते हैं, जो मन सातों होताओं (देखना, सुनना, साँस लेना, बोलना, चखना, स्पर्श और चलना) को वश में करता है, वह मेरा मन अच्छे विचारों से भरा रहे।

5. **ओं यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।**

अर्थ—ओम् ! जिसमें ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद चक्र की नाभि में अरों के समान लगे हैं और सांसारिक ज्ञान धागे में मणियों के समान जुड़ा है, जिसमें प्रजाओं का सब कुछ निहित है, वह मेरा मन शिव संकल्पों वाला हो।

6. **ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभी-शुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।**

ओम् ! हमें ऐसी शक्ति दो कि हम अपने इस चंचल मन

को अपने वश में इस प्रकार लाएँ जैसे एक अच्छा रथवान चंचल घोड़ों को लगाम एवं अपनी कुशलता से काबू में लाता है। हृदय में स्थित एवं अवृद्ध मेरा यह मन शुभ विचारों से भरा रहे।

7. **ओं स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः।।**

हे परमेश्वर ! आप गौओं, घोड़ों, मनुष्यों, अन्न और जड़ी-बूटियों की रक्षा के लिए हमें सामर्थ्य प्रदान कीजिए। वनस्पति-जगत् हमारी प्रसन्नता और शान्ति का कारण बने।

8. **ओं अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा-पृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तराद-धरादभयं नो अस्तु।।**

अर्थ—हे जगत्-पिता परमेश्वर ! अंतरिक्ष लोक से ह अभय प्रदान करो। द्युलोक और पृथिवी लोक से भी हमें अभय प्रदान हो, और पीछे, ऊपर, नीचे, पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण आदि दिशाओं से भी हमें किसी प्रकार का भय न हो।

9. **ओं अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।**

अर्थ—हे जगदीश्वर! हमें मित्रों से और शत्रुओं से नर्भय करो। हम जानने वालों से अभय रहें, न जानने वालों ो अभय हों। दिन और रात सर्वदा हम निर्भय करें; चारों

दिशाएँ और वहाँ के रहने वाले सभी लोग हमारे मित्र हों।

अथ अग्निहोत्रम् (देव-यज्ञ)

यज्ञ के लिए बैठे हुए सब लोग अपने जल-पात्र से दाएँ हाथ की हथेली पर थोड़ा जल लेकर नीचे लिखे मंत्रों से तीन आचमन करें।

1. **ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।** इससे पहला आचमन करें।

अर्थ—हे प्रभु, आप जल के समान शांति देने वाले हैं, हमें शांति प्रदान कीजिए। जैसे जल हमारे जीवन का आधार है, वैसे ही आप जीवन के आधार हैं।

2. **ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।।** इससे दूसरा आचमन करें।

अर्थ—हे परमेश्वर ! जैसे जल मेघ बन कर ऊपर से सुख की वृष्टि करता है, उसी प्रकार आप हमें संकटों से बचाते हैं।

3. **ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा।।** इससे तीसरा आचमन करें।

अर्थ—हे परमात्मन् ! हमें सत्य के मार्ग पर चलते हुए यश और लक्ष्मी प्राप्त हो ताकि हम दूसरों की भी सहायता कर सकें।

[थोड़े से जल से अपना सीधा हाथ धोइए]

अंग-मार्जन स्पर्श-विधि

ऊपर लिखे तीन मंत्रों से आचमन करने के बाद बाएँ हाथ की हथेली में थोड़ा जल लेकर दाएँ हाथ की बीच की दो अंगुलियों से नीचे लिखे मंत्रों का उच्चारण करते हुए अंग स्पर्श करें और सातवें से मार्जन करें।

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ।।१।। इससे मुख का स्पर्श करें।

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।।२।। इससे नासिका का।

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।३।। इससे दोनों आँखों का।

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।।४।। इससे दोनों कानों का।

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।।५।। इससे दोनों भुजाओं का।

ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।।६।। इससे दोनों जांघों का।

ओम् अरिष्टानि मेंऽगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।७।। इससे सारे शरीर पर जल का मार्जन करें।

इनके अर्थ :—हे प्रभो ! मेरे मुख में वाक्शक्ति, दोनों नासिका-छिद्रों मैं प्राण-शक्ति, आँखों में देखने की शक्ति और कानों में सुनने की शक्ति बनी रहे। मेरी भुजाएँ बलवान् रहें। मेरी जंघाओं में चलने का सामर्थ्य रहे। मेरे सम्पूर्ण अंग और सारा शरीर ही रोग-रहित बना रहे।

अग्न्याधान-प्रकरणम्

ओं भूर्भवः स्वः।

इससे अग्नि प्रज्वलित करें।

अर्थ—हे ईश्वर ! आप जीवनदाता, दुःख-विनाशक एवं सुखस्वरूप हैं।

ओं भूर्भवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नाद-मन्नाद्यायादधे।।

इस मंत्र के द्वारा वेदी के बीच अग्नि को धर कर उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अगला मंत्र पढ़कर अग्नि प्रदीप्त करें।

अर्थ—हे प्रभो ! आपकी बनाई इस धरती पर, जहाँ सब विद्वान् यज्ञ करते हैं, मैं अग्नि का आधान कर रहा हूँ। आप अन्न व ऐश्वर्य से भरपूर कीजिए ताकि मैं अपने समाज के लोगों की सहायता कर सकूँ। मेरा मन आकाश जैसा विशाल कीजिए तथा मेरे मन में पृथ्वी जैसा धैर्य व सहनशीलता हो।

अग्नि प्रदीप्त करने का मंत्र

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयंच अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

अर्थ—ओं ! हे अग्नि ! तुम प्रदीप्त हो। तुम्हारी कृपा से यजमान यह यज्ञ सम्पन्न कर सके और समाज की सेवा कर सके। हमें सद्बुद्धि दीजिए, हम सब परस्पर मिलकर करें।

पहली समिधा नीचे लिखे मंत्र के उच्चारण के अंत में स्वाहा शब्द के साथ हवन-कुंड में रखिए।

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ।।

अर्थ—हे अग्निदेव! आप प्रकाशमय हैं। इस समिधा एवं घी से प्रदीप्त होइए। हमें अन्न, धन, सुख व पुत्र से समृद्ध कीजिए। हमारी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति कीजिए। यह आहुति अग्नि के लिए है। मेरा अपना तो कुछ नहीं, सब कुछ प्रभु का दिया है।

[नीचे लिखे दो मंत्रों से दूसरी समिधा रखें]

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन।

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम।

हे मनुष्यो ! तुम समिधा से अग्नि को प्रदीप्त कर के घी से इस अतिथि को प्रचण्ड करो और फिर इस में हव्य पदार्थ डालो।

जब अग्नि पूर्णतः प्रदीप्त हो जाये और यह चमक रही हो तभी पिघला हुआ घी डालो। यह जातवेदस अग्नि को मेरी आहुति है, इस में मेरा कुछ नहीं।

(आध्यात्मिक भाव यह है कि हम अपने आप प्रभु को समर्पित कर के स्तुतिमंत्रों से उसकी उपासना करें। जब भगवान् की हृदय में अनुभूति हो जाये, तो हम उसी में लीन रहें।)

नीचे लिखे मंत्र से तीसरी समिधा रखें।

ओं तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।

हे अंग-अंग में विद्यमान तेजःस्वरूप, हम जैसे समिधा और घृत से इस अग्नि को बढ़ाते हैं, वैसे ही तुझे अपने मन में प्रदीप्त करें। जैसे यह अग्नि प्रकाशमय युवा है, ऐसे ही तुझे हृदय में विद्यमान रखें। यह मेरी समिधा अंगिरस अग्नि को है। मेरी नहीं है।

घृताहुति मंत्र

[नीचे लिखे मंत्र से पाँच बार बोलकर चम्मच से घी की पाँच आहुतियाँ दीजिए]

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे— इदन्न मम।

जल-प्रसेचन के मंत्र

ओं अदितेऽनुमन्यस्व।। इस मंत्र से पूर्व दिशा में।

अर्थ—हे प्रभु! हमें अच्छे कर्म करने के लिए अच्छी बुद्धि दीजिए।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व।। इससे पश्चिम दिशा में।

अर्थ—हे पिता परमेश्वर! हमें शुभ कर्म करने के लिए अनुकूल बुद्धि दीजिए।

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व।। इससे उत्तर दिशा में।

अर्थ—हे पिता परमेश्वर! पुण्य कर्मों के लिए हमें मेधा बुद्धि दीजिए।

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नःस्वदतु।।

अर्थ—हे ईश्वर! मेरी बुद्धि को पवित्र रखिए, यज्ञ और यज्ञपति को बढ़ाइए और मेरी वाणी सब को प्रिय हो।

इस मंत्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।

नीचे लिखे पहले दो मंत्रों से हवनकुंड के उत्तर व दक्षिण भाग में आहुति देवें—

1. **ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये—इदन्न मम।**

2. **ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय—इदन्न मम।**

3. **ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये—इदन्न मम।**

4. **ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय—इदन्न मम।**

5. **ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये—इदन्न मम।**

6. ओं भुववार्यवे स्वाहा। इदं वायवे—इदन्न मम।

7. ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय—इदन्न मम।

8. ओं भूर्भव: स्वरग्निवाय्वादित्येभ्य: स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्य इदं न मम.

प्राजापत्याहुति

1. ओं भूर्भुव: स्व:। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च न: आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम।

अर्थ—वह ओम् जीवनदाता, दु:खनाशक और सुखों की वर्षा करने वाला है। वह हमें शक्ति एवं जीवन दे। अग्निदेव को मैं यह आहुति देता हूँ। मेरा अपना तो कुछ नहीं; सब कुछ हे प्रभु, आप का है।

2. ओं भूभुर्व: स्व:। अग्निर्ऋृषि: पवमान: पाञ्चजन्य: पुरोहित: तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।

अर्थ—ओं ! आप जीवनदाता, दु:खनाशक और सुखों की वर्षा करने वाले हैं। हे प्रभु, आप सर्वोपरि हैं, न्यायकारी व सत्यस्वरूप हैं, आप हमारे नेता हैं। अग्निदेव ! हम आपको आहुति देते हैं। सब कुछ आपका ही दिया है, मेरा तो इसमें कुछ भी नहीं।

3\. **ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदम अग्नये पवमानाय—इदन्नमम।।**

अर्थ—ओं जीवनदाता, दुःखनाशक और सुख की वर्षा करने वाले हे ईश्वर, जीवन और शक्ति दीजिए, स्नेह और दया की दृष्टि रखिए। मैं यह आहुति अग्निदेव को देता हूँ। सब कुछ प्रभु का दिया है। मेरा तो कुछ भी नहीं।

4\. **ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो' विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदं प्रजापतये—इदन्नमम।।**

अर्थ—ओं जीवनदाता, दुःख-विनाशक और सुखों की वर्षा करने वाले हे प्रजापालक प्रभु ! आपसे बढ़ कर संसार में कोई दूसरा नहीं है। जिस उत्तम कामना से हम इस यज्ञ में आहुति अर्पण करते हैं, हमारी वह शुद्ध कामना पूरी हो। हम धन-ऐश्वर्यों के स्वामी बनें। यह आहुति आप प्रजापति के लिए है, इसमें मेरा कुछ नहीं है।

[नीचे लिखे आठ मंत्रों का उच्चारण करते हुए यजमान घी की आहुति डालेंगे तथा अन्य भाग लेने वाले 'स्वाहा' शब्द के साथ हवन कुंड में सामग्री की आहुति डालेंगे।]

1\. **ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽव-यासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।।**

अर्थ—हे अग्ने! आप प्रकाशमान, ज्ञानवान्, अग्र नेता व सब विद्वानों में श्रेष्ठ है। हमें ऐसी बुद्धि दीजिए कि हम कभी किसी विद्वान् महापुरुष का अनादर न करें। हमारे हृदय से द्वेष की भावना को दूर कर दीजिए। यह आहुति अग्नि एवं वरुण देव रूप आप के लिए है, मेरे लिए नहीं।

2. **ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्—इदन्न मम।।**

अर्थ—हे ज्ञानवान् प्रभु ! अपने आशीर्वाद से हम सब की रक्षा कीजिए। इस प्रभात वेला में अग्निहोत्रादि शुभ और मंगल कार्यों में आप हमारे विशेषतया समीप हैं। आप हमें ऐसी बुद्धि दीजिए कि हम सदैव विद्वानों व सत्पुरुषों की संगति में रहें। यह आहुति अग्नि एवं वरुण रूप आप के लिए है। सब कुछ आप प्रभु का दिया है, मेरा कुछ भी नहीं।

3. **ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा। इदं वरुणाय—इदन्न मम।।**

अर्थ—हे प्रशंसनीय परमेश्वर ! आप मेरी विनम्र प्रार्थना सुनिए और इस यज्ञ के पवित्र समय पर हम को सुख व शांति प्रदान कीजिए। मैं अपनी रक्षा के लिए ही तो बार-बार आपको पुकारता हूँ। यह यज्ञ-आहुति आपके लिए है, मेरा तो कुछ नहीं; सब कुछ प्रभु का दिया है।

4. ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय— इदन्न मम।।

अर्थ—हे परम प्रशंसनीय जगदीश्वर! वेद-मंत्रों से सामग्री द्वारा यजमान जिन अभिलाषाओं के लिए यज्ञ करता है और स्तुति गाता है, उसकी कामना पूर्ण हो। हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए, हमें सद्‌बुद्धि दीजिए, हम दीर्घायु हों और हमारी आत्माएँ आपकी भक्ति में प्रवृत्त हों। यह यज्ञ-कर्म आपको समर्पित है, मेरा तो इसमें कुछ नहीं। सब कुछ प्रभु, आप का दिया है।

5. ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्‌भ्यः स्वर्केभ्यः —इदन्न मम।।

अर्थ—हे वरुण देव! आप इस संसार की रचना करने वाले एवं चलाने वाले हैं। आपके ज्ञान बिना कोई भी जीव आँख नहीं झपक सकता। यह जो सैंकड़ों और हजारों प्रकार की विघ्न-बाधाएँ यज्ञ-विषय में उठती हैं, उन विघ्न-बाधाओं को दूर करने के लिए हे सर्वव्यापक प्रभु! आप व विद्वान् पुरुष कृपा करें और सहयोग प्रदान करें। यह यज्ञ की

आहुति वरुण देव व मरुत् देव रूप आप के लिए है। मेरे लिए नहीं।

6. **ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि।। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा। इदमग्नये अयसे इदन्न मम।।**

अर्थ—हे ज्ञानमय प्रभु ! आप सर्वव्यापक हैं। आप पापी और दुष्ट कर्म वालों को, प्रायश्चित्त योग्य लोगों को पवित्र बनाने वाले हैं। वास्तव में यह सत्य है कि आप सदैव कल्याण की धारणा रखते हैं। अत: हे प्रभु जी ! आप हमारे इस यज्ञ को सफल बनाइये। हमें ऐसी बुद्धि व शक्ति प्रदान कीजिए कि हम बुरे कार्य न करें। यह आहुति अग्निदेव रूप आप के लिए है, मेरा इस पर अधिकार नहीं है।

7. **ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाऽऽदित्यायादितये च—इदन्न मम।।**

अर्थ—हे पूजनीय प्रभु ! हम में से आलस्य, प्रमाद, मिथ्या-भाषण, राग-द्वेष, निन्दा, लोभ, मोह, अहंकार आदि—ममता, कीर्ति-यश, उपाधि आदि अहंभाव वाले बंधनों को अच्छी तरह नष्ट कर दीजिए। हे अविनाशी प्रभु। हम आपके नियमों का पालन करते हुए सदा पाप से बचें और मुक्ति के महान् सुख को प्राप्त कर सकें। यह यज्ञ की

आहुति वरुण, आदित्य व अदिति रूप आपके लिए है। यह अब मेरी नहीं है।

8. ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदम् जातवेदोभ्याम् इदन्न मम।।

अर्थ—हे ज्ञानमय अनन्त प्रभु ! हमारी प्रार्थना है कि विद्वान् लोग मनसा, वाचा, कर्मणा एक हों। यज्ञ का कभी भी लोप न होने दें। वेदों के विद्वान् अपने सदुपदेश से हमारा कल्याण करें। यह आहुति जातवेद भगवान तेरे लिए है। मेरे लिए नहीं, मेरा इस पर अधिकार नहीं है।

प्रातःकालीन आहुतियों के मंत्र

[इन चार मंत्रों से हम एक ओर सूर्य का और दूसरी ओर भगवान् का आह्वान करते हैं। यजमान घी और अन्य लोग सामग्री की आहुति देंगे।]

1. ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अर्थ—हे जगत् के उत्पादक, ज्ञान-ज्योति के प्रकाशक भगवन् ! यह आहुति आपके लिए है।

2. ओम् सूर्यो वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।

अर्थ—ब्रह्मयज्ञ के दाता, ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आपकी सत्य वेद-ज्योति सर्वत्र फैले, अर्थात् प्रकाश दे।

3. ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

अर्थ—हमारे नेत्रों की ज्योति प्रभु आप हैं और आप ही से सारा संसार प्रकाश पा रहा है। हम भी उसी ज्योति की प्राप्ति के लिए यह आहुति दे रहे हैं।

4. ओम् सजूर्देवैन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।

अर्थ—उपजने वाली दैवी शक्तियों और ऐश्वर्य के दाता सूर्यदेव उषा के साथ-साथ हमारी इस आहुति को स्वीकार करें और यज्ञ की सुगंधि को पूरे संसार में फैला दें। इसी प्रकार हे विश्व के उत्पादक प्रभो ! आपकी अनुभूति करते हुए हम लोग संसार में सद्गुणों की आहुति फैला दें।

सायंकालीन आहुतियाँ

1. ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।

अर्थ—हे प्रकाश-स्वरूप परमेश्वर ! आप प्रकाशमान, अग्नि प्रकाशमान और विश्व की सकल ज्योतियाँ भी आपके द्वारा प्रकाशमान हैं। आप सुख और आनन्द दें।

2. ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।

अर्थ—हे जगत् के उत्पादक प्रभो ! आप तेज-स्वरूप और अग्नि भी तेज-स्वरूप है। आप दोनों हमारे लिए मंगलकारी हैं।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।

[इस मंत्र का पाठ ओं के पश्चात् मन में प्रभु तथा उसकी

ज्योति का मननकर और स्वाहा बोलकर आहुति दें।]

अर्थ—भगवान् ज्योति हैं, अग्नि उन्हीं की ज्योति है और अग्नि की ज्योति संसार में है, उन्हीं ज्योतियों की ज्योति प्रभु को हम यह आहुति अर्पण करते हैं।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

अर्थ—प्रकाशमान अग्नि उस ईश्वर का ही रूप है जिसने यह संसार बनाया है और जो सारे संसार का अग्रणी है। अग्निदेव ! हमारी आहुति को स्वीकार करें और यज्ञ की सुगंधि समस्त संसार में फैलाएँ।

प्रातः-सायं दोनों समय के यज्ञ-मन्त्र

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय—इदं न मम।

अर्थ—हे प्रभो ! आप प्राणप्रिय हैं और यह सर्वत्र व्यापक होने वाली अग्नि महान् गतिशील है। प्राणवायु की शुद्धि के लिए मैं यह आहुति अग्नि को अर्पण करता हूँ जो केवल मेरे लिए नहीं, समस्त संसार की प्राण-शक्ति के लिए हैं।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।

अर्थ—दुःखों को दूर करने वाले भगवन् ! यह आहुति संसार के कष्टों को दूर करने वाले आप तथा कष्टनिवारक वायु के लिए है। मेरा इस में कुछ नहीं।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय—इदं न मम.

अर्थ—भगवन्! आप सुख-स्वरूप हैं, सूर्य की ज्योति और उस व्यान वायु के लिए यह आहुति है, जो जठराग्नि तीव्र रखती है। व्यान स्वरूप आपको भी यह आहुति समर्पित है। मेरा इसमें कुछ नहीं।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।

अर्थ—हे परमेश्वर आप सर्वाधार, सर्वव्यापी और सुखस्वरूप हैं। आप दुःख-विनाशक प्रभु के लिए, अग्नि, वायु तथा सूर्य की किरणों की पवित्रता के लिए, तथा प्राण-अपान-व्यान की शुद्धि के लिए यह सुंदर और उत्तम पदार्थों की आहुति है। इस पर मेरा अधिकार नहीं है।

ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

अर्थ—सर्वरक्षक, जल के समान शांतिप्रदाता, ज्योतिस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, आनन्द-रस के दाता, सबसे महान्, और जो मुक्तिदाता सम् चित् और आनन्दरूप है, उस प्रभु को यह आहुति है।

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

अर्थ—हे अग्निदेव ! जिस मेधा बुद्धि का विद्वान् जन आश्रय लेते हैं, जो बुद्धि आपने मेरे पूर्वजों को दी थी, हे ज्ञानस्वरूप ज्योतिर्मय भगवन् ! मुझे भी वह मेधा बुद्धि प्रदान कीजिए।

7. **ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।**

अर्थ—हे जगत्-रचयिता, सुखों के दाता, विश्व-प्रेरक दिव्य-स्वरूप परमेश्वर ! आप हमारे समस्त दुःखों, संकटों, बुराइयों को दूर करें और जो कल्याणकारक हों, उन्हें हमें प्राप्त कराइए।

8. **ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्म—ज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।**

अर्थ—ओं-हे ईश्वर ! आप स्वप्रकाशस्वरूप एवं ज्ञानमय हैं। आप हमें उस रास्ते पर लगाइए जो सच्चे ज्ञान एवं धर्म को जाता है। ऐसी कृपा करो कि हम शुभ कर्मों द्वारा इस संसार में ज्ञान व ऐश्वर्य प्राप्त कर सकें। हमारे कुटिलता-युक्त कर्म व पाप दूर कीजिए। शुद्ध भावना से प्रेरित होकर हम हमेशा आपकी उपासना करते रहें।

स्विष्ट कृत् (मिष्टान्न) प्रायश्चित्ताहुति

आत्म-समर्पणम्

पूर्णाहुति से पूर्व यजमान पूर्णतः निरभिमान होकर भगवान् को आत्म-समर्पण करके ही यह आहुति देवयज्ञ में अर्पण करे।

ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व-प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदम् अग्नये स्विष्टकृते—इदन्न मम।

अर्थ—ओ३म्! हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! इस मंगलमय यज्ञकर्म को करते हुए मुझसे भ्रम अथवा भूलकर, जाने या अनजाने से जो अधिकता या न्यूनता रह गई हो उसे आप मेरी उत्तम भावनाओं को जानते हुए सुहुत और सफल कीजिए। जो कुछ मैंने स्नेह एवं श्रद्धा से अर्पित किया है, उसे स्वीकार कीजिए। समस्त उत्तम मनोरथों को सिद्ध करने वाले, उत्तम दानी, पापों के नाशक, पुण्यों के प्रेरक, ज्ञान-विज्ञान के लिए हमारी सब पवित्र कामनाओं को आप पूरा कीजिए। यह आहुति शुद्ध पवित्र इष्ट की सिद्धि करने वाले अग्निरूप परमेश्वर ! आप के लिए है। मेरा अपना कुछ नहीं; सब कुछ प्रभु आपका ही दिया है।

ओं प्रजापतये स्वाहा।।

अर्थ—ओं—मैं प्रजापति का आह्वान करता हूँ, यह आहुति प्रजापति के लिए है। यह अब मेरी नहीं है।

[ओं शब्द का उच्चारण करके 'प्रजापतये' मौन होकर हृदय में उस प्रजापति का ध्यान करते हुए फिर स्वाहा बोलकर आहुति दें।]

गायत्री-मंत्र

Gayatree Mantra is the supreme Mantra of Vedas. Gayatree Mantra is a short prayer to the Almighty God Om. This Mantra is to be recited by all, its repeated recitation purifies the mind, destroys pain, sin and ignorance, brings liberation and bestowes health, beauty, strength, vitality, power and intellignece.

May peace be on all of us.

ओं भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

शब्दार्थ—ओ३म् तत्—हे परमेश्वर आप

भूः—प्राणों के प्राण
भुवः—दुःख-विनाशक
स्वः—सुख-स्वरूप
सवितुर्वरेण्यं—सारे जगत् के पिता (उत्पन्न करने वाले) भजने योग्य
भर्गो—शुद्धस्वरूप
देवस्य—दिव्य शक्तियों को भी शक्ति देने वाले हो।
धीमहि—ध्यान करते हैं।
यो—जो आप
नः—हमारी, धियः-बुद्धियों को
प्रचोदयात्—सदा शुभमार्ग में, शुभकर्मों के लिए प्रेरित करें।

नमस्कार मंत्र

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

शब्दार्थ—ओं—हे परमात्मदेव !
शंभवाय—मैं आप सुखदाता को
नमः—नमन करता हूँ।
मयोभवाय—सबको सदा सुखी रखने वाले
च—और
शंकराय नमः—मंगलकारी प्रभु आप को मैं नमन करता हूँ।
मयस्कराय—सबके लिए मंगल ही मंगल करने वाले
च शिवाय नमः—तथा कल्याणकारी को मैं नमन करता हूँ।

च शिवतराय—और आप सबका अधिक से अधिक कल्याण करने वाले हैं। आप को मेरा नमन हो।

पूर्णाहुति

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ! ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा !! ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा !!!

अर्थ—हे जगत्-पिता परमेश्वर ! हमने यह जो यज्ञ-कर्म सर्व-कल्याणार्थ किया है, यह आप की कृपा से पूर्ण हुआ ! पूर्ण हुआ !! पूर्ण हुआ !!!

शान्ति-पाठ

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

अर्थ—ओम् ! आकाश एवं अंतरिक्ष में शान्ति ही शान्ति हो।
जल और थल में शान्ति हो।
औषधियों और वनस्पतियों में शान्ति हो।
ईश्वर के सब रूप हमारे लिए शांतिदायक हों।
ईश्वर हमें शांति दें, सारे संसार में शांति हो।
शान्ति शांतिमय हो, प्रभु मुझे ऐसी शांति प्रदान करें।

यज्ञरूप भगवान से प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें।।
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नारी की।।
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किए।
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
हाथ जोड़ झुकाएँ मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ ! करुण-रूप करुणा आपकी सब पर रहे।।
पूजनीय ....

जन्म-दिन-पद्धति के मंत्र

(1) ओ३म् उपप्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम्। अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे।।

भावार्थ—हे प्रिय प्रशंसनीय प्रभो ! दीर्घ आयु करो। जिस प्रकार आज मैं आहुतियों द्वारा यज्ञाग्नि को बढ़ा रहा हूँ वैसे ही मैं सात्त्विक अन्न सेवन करके जठराग्नि को बढ़ाता हुआ युवा बनूँ और अपने जन्म-दिन निरन्तर मनाता रहूँ।

अर्थ कविता में—

काबिले तारीफ प्यारे ईश्वर !
तेरे गुण गाता रहूँ मैं उम्र भर।।
उम्र भी लम्बी करो परमात्मा !
मैं सदा बन कर रहूँ धर्मात्मा।।
अन्न सादा हो जो मैं सेवन करूँ !
तेरी कृपा से सदा आगे बढ़ूँ।
यज्ञ करके गीत गाऊँ हर बरस।।
जन्म-दिन अपना मनाऊँ हर बरस।।

(2) ओ३म् आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधि-निधेह्यस्मै।
रास्योषं सवितरासुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम्।।

अर्थ—

हे प्रभु ! तू सर्व शक्तिमान है।
तेरा हरजा हर तरफ को ध्यान है।।

जिन्दगी भी आपने ही प्रदान की।
उम्र लम्बी हो मेरे यजमान की।।
खूब बलशाली हो और धनवान हो।
नेक दिल और नेक यह इन्सान हो।।
यह दुआ है आप से परवर दिगार।
सौ बरस जीता रहे प्यारा कुमार।।

(3) ओ३म्—शतं जीव शरदो वर्धमानः।
शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतं त इन्द्रो अग्निः बृहस्पतिः,
शतायुषा हविषाहार्षमेनम्।

सौ वर्षों तक बढ़ता जा।
जीवनभर तू सुख ही पा।।
सौ शरदें सौ हेमन्त-वसन्त।
सुख दें तुझ को दिशा-दिगन्त।।
इन्द्र तुझे दे ऐश्वर्य महान।
अग्नि करे तेरा कल्याण।।
बृहस्पति जो ज्ञान-भण्डार।
ज्ञान से तव कर दे उपकार।।
सौ वर्षों का जीवन पा।
उत्तम कर्म ही करता जा।।

(4) ओ३म् जीवास्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।
उपजीवा स्थोपजीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।

सं जीवास्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।
जीवलास्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।

दो मुझे ऐ आप्त जन आशीर्वाद।
दीर्घ आयु हो मेरी, न हो विषाद।।
बख्श वह जीवन कि मैं ऊंचा रहूं।
ऐसा जीवन विश्व में धारण करूं।।

(5) ओ३म् आयुषायु:कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथा:। प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम्।।

अर्थ—

शान से अपना मनाऊँ जन्म-दिन।
ध्यान से अपना मनाऊँ जन्म दिन।।
जो इरादे हों मेरे मजबूत हों।
अटल चंगे भले मजबूत हों।।
नेक कामों में बिताऊँ तमाम।
विश्व में कर जाऊँ अपना नेक काम।।
आज विद्वानो। मुझे आशीष दो।
मेरी झोली ज्ञान-पुष्पों से भरो।।
भद्र पुरुषों! भक्त जन! ओ देवियो!
वेद वचनों से भी तुम आशीष दो।।

ताकि कोई दुःख न आये मेरे समीप।
सौ वर्ष तक हो मुझे जीना नसीब।।

दीर्घायु बन जियूँ मैं ऐसे,
देव-श्रेष्ठ ज्यों जीते हैं।
प्राणशक्ति का संयम कर के,
आत्मामृत को पीते हैं।
पूर्णायु से पूर्व न मुझ को,
मृत्यु का संदेश मिले।
प्राणशक्ति मैं प्राप्त करूँ नित,
मेरा जीवन-पुष्प खिले।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।।
हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

वन्दना

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन्! पूरी होय।।
विद्या, बुद्धि तेज, बल , सबके भीतर होय।
दूध, पूत, धन-धान्य से, वंचित रहे न कोय।।

आपकी भक्ति-प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।
मिले भरोसा नाम का, सदा हमें जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।
पाप से हमें बचाइए, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय के, सबको करो निहाल।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धीरज वीरता, सबको दो करतार।।
नारायण प्रभु आप हैं, पाप के मोचन-हार।
दूर करो अपराध सब, कर दो भव से पार।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिए कृपा-निधान।
साधु-संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।

यज्ञ-महिमा

भजन-1

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से।।

1. ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का।
करते हैं दुनिया वाले सब सम्मान यज्ञ का।।
दर्जा है तीन लोकों में—महान यज्ञ का।
भगवान का है यज्ञ और भगवान यज्ञ का।
जाता है देवलोक में इन्सान यज्ञ से।।होता है..

2. करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्निदेव।
डालो विहित पदार्थ शुद्ध खाते हैं अग्निदेव।
सब को प्रसाद यज्ञ का पहुँचाते हैं अग्निदेव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते हैं अग्निदेव।
बदले में एक के अनेक दे जाते हैं अग्निदेव।
पैदा अनाज करता है भगवान यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।।होता है.

3. शक्ति और तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में।
पूजा है इसको श्रीकृष्ण ने भगवान राम ने।
होता है कन्यादान भी इसी के सामने।
मिलते हैं राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से।।होता है..

4\. सुख शान्तिदायक मानते हैं सब मुनि इसे।
वशिष्ठ विश्वामित्र और नारद मुनि इसे।
इसका पुजारी कोई पराजित नहीं होता।
भय यज्ञ-कर्त्ता को कभी किञ्चित् नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से।।होता है..

भजन-2

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गंधर्व गुणि-जन धन्यवाद।।
मंदिरों में कंदरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद।
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर-भर धन्यवाद।।
कूप में तालाब में, सिंधु की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद।
शादियों में जलसयों में यज्ञ और उत्सव के बाद।
मीठे स्वर से मिल करें नारी-नर सब धन्यवाद।
गान कर अमीचंद भजनानन्द ईश्वर की स्तुति।
ध्यान से सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद।।

भजन-3

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।

मेरा निश्चय है बस एक यही, इस बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती-भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में।
या तो मैं जग से दूर रहूँ, और जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में।।
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी रहूँ।
मुझ सेवक की रग-रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।
जब-जब संसार का बंदी बनूँ, दरबार तेरे में आऊँ मैं।
हो कर्मों का मेरे निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में।।
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप ....

भजन-4

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दु:ख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो।।
भूलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अंत नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समुझे विरले बुधवारे हो।
शुभ शांति-निकेतन प्रेमनिधे, मन-मंदिर के उजियारे हो।।
यही जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप' हरि, केहि के अब और सहारे हो।।

भजन-5

प्रभो ! मैं आ तो गया हूँ तेरे दर पै लेकिन,
मैं सर को झुकाने के काबिल नहीं हूं।
तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
कि जिस को उठाने के काबिल नहीं हूं।।

1. तुम्हीं ने अता की मुझे जिन्दगानी,
तेरी महिमा मैंने, फिर भी न जानी।
करजदार तेरी दया का हूँ इतना,
कि मैं तो चुकाने के काबिल नहीं हूँ।। तेरी मेहरबानी

2. यह माना कि दाता हो तुम कुल जहाँ के,
मगर झोली फैलाऊँ, मैं कैसे आके ?
जो पहले दिया है वह कुछ कम नहीं है,
मैं उसको पचाने के काबिल नहीं हूं।। मैं आ तो ....

3. जमाने की चाहत में खुद को मिटाया,
तेरा नाम हरगिज जुबाँ पै न आया।
गुनाहगार हूँ मैं, सजावार हूँ मैं,
तुझे मुहँ दिखाने के काबिल नहीं हूँ।। करजदार तेरा

4. तमन्ना यही है कि सर को झुका दूँ,
तेरा दर्श इक बार जी-भर के पा लूँ।
सिवा दिल के टुकड़ों के ऐ मेरे दाता !
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।।
मैं आ तो गया हूँ तेरे दर पै लेकिन,
मैं सर को झुकाने के काबिल नहीं हूँ।।

भजन-6

वेद स्वाध्याय सत्संग करते रहो,
एक दिन प्राप्त सत् ज्ञान हो जायेगा।
शांति होगी परम भ्रांति मिट जायेगी,
पाप-तापों का अवसान हो जायेगा।।
फूल ज्योंही खिला बाग सुरभित हुआ,
मस्त भँवरों की आने लगीं टोलियाँ।
सद्‌गुणों की सुगन्धि लुटाते चलो,
सारी जगती में सम्मान हो जायेगा।।
तन से सेवा करो, मन से सद्‌भावना,
धन से हरो दुखी दीन की दीनता।
करिये सन्तुष्ट भगवान के विश्व को,
तुमसे सन्तुष्ट भगवान हो जायेगा।।
आज आई बड़ी आपदा की घड़ी,
आर्यो ! तुम पे है जिम्मेदारी बड़ी।
आप हैं गर सजग पूर्ण कर्त्तव्यरत,
राष्ट्र का पूर्ण उत्थान हो जायेगा।।
याद जनता करेगी तुम्हें सर्वदा,
नाम मरकर भी दुनिया में होगा अमर।
गर हकीकत और श्रद्धानन्द सम,
तू प्रकाशार्य बलिदान हो जायेगा।।

भजन—7

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।।

माता तुही तुही पिता, बन्धु तू ही तू सखा।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।
जग को रचाने वाला तू, दुखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।
तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।
तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन।
तेरी ही आते हम शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।
बालक हैं हम सभी तेरे, तू है पिता परमात्मा।
श्रेष्ठ मार्ग पर चला, तुम बिना हमारा कौन है।।

भजन-8

पास रहता हूँ, तेरे, सदा मैं अरे,
तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूँ ?
मूढ़ मृग तुल्य चारों दिशाओं में तू,
ढूँढने मुझको जाए तो मैं क्या करूँ ??
कोसता दोष देता मुझे है सदा,
मुझ को यह न दिया, मुझ को वह न दिया।
श्रेष्ठ सबसे मनुज तन तुझे दे दिया,
सब्र तुझको न आए तो मैं क्या करूँ ??
तेरे अन्त:करण में विराजा हूँ मैं,
'कर न यह पाप' संकेत करता हूँ मैं।
लिप्त विषयों में तू सीख मेरी भली,
ध्यान में तू न लाए तो मैं क्या करूँ ??

जाँच अच्छे बुरे की तुझे हो सके,
इसलिए बुद्धि मैंने तुझे दी है अरे।।'
किन्तु तू मन्दभागी अमृत छोड़ कर,
घोर विषय-विष को पीये तो मैं क्या करूँ ??
फूल-फल-शाक-मेवे व दुग्धादि सब,
मधुर आहार मैंने तुझे हैं दिये।
तू तम्बाकू अमल मद्य मांसादि खा,
रोग तन में लगाये तो मैं क्या करूँ ??
सरस सुखकर पदार्थ-सुदृश्यों भरा,
विश्व सुन्दर है कैसा यह मैंने रचा।
अपनी करतूत से स्वर्ग वातावरण,
न एक तू ही बनाये तो मैं क्या करूँ ??

भजन-9

तेरे पूजन को भगवान! बना मन-मन्दिर आलीशान।
किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनावे तेरी मूरत,
तू है निराकार भगवान—बना मन-मन्दिर आलीशान।।
यह संसार है तेरा मन्दिर, तू ही रमा है इस के अन्दर,
धरते ऋषि मुनि सब ध्यान—बना मन-मन्दिर आलीशान।।
सागर तेरी शान बतावे, पर्वत तेरी शोभा गावे,
हारे ऋषि मुनि सब आन—बना मन-मन्दिर आलीशान।।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया,
तेरा रूप अनूप महान—बना मन-मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये,
तेरी लीला ईश महान—बना मन-मन्दिर आलीशान।।

तू ही जल में, तू ही थल में, तू हर डाल की हर पातल में,
तू हर दिल में मूर्तिमान—बना मन-मन्दिर आलीशान।।

भजन-10

ओ३म् भूर्भुवः स्वः .... प्रचोदयात्।
तूने हमें उत्पन्न किया, पालन भी कर रहा तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता तू।।
ओ३म् भूर्भुवः स्व .... प्रचोदयात्।
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में तू हो रहा है विद्यमान।।
ओ३म् भूर्भुवः स्वः .... प्रचोदयात्।
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।
ओ३म् भूर्भुवः स्वः .... प्रचोदयात्।